16. बेचारा 'कामनमेन'

• हरिशंकर परसाई

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म सन् 1924 ई. को जबलपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ। हिंदी में उद्देश्यपरक हास्य–व्यंग्य लिखने के क्षेत्र में परसाई जी को सर्वाधिक सफलता और लोकप्रियता प्राप्त हुई है। हिंदी में एम.ए. करने के पश्चात् ये मध्यप्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन करते रहे। आजीवन वे अनेक पत्र–पत्रिकाओं में विभिन्न शीर्षकों से नियमित स्तंभ लिखते रहे। आपने व्यंग्य का प्रयोग सामाजिक जीवन की विकृतियों और रुग्णताओं के निवारण के लिए शल्य–क्रिया के रूप में किया। साहित्य, समाज, धर्म और राजनीति के क्षेत्र में प्रकट होने वाली विकृतियों और विसंगतियों को आपकी लेखनी ऐसी वक्रता के साथ उभारती है कि उनके प्रति तीव्र विरोध और विद्रोह का भाव उमड़ पड़ता है। आपने निबंध, कहानी, रेखाचित्र और उपन्यास आदि साहित्य की अनेक विधाओं का व्यंग्यमय प्रयोग किया है। 'रानी नागफनी की कहानी' और 'तट की खोज' आपके व्यंग्यात्मक उपन्यास हैं। 'हँसते हैं रोते हैं' और 'जैसे उनके दिन फिरे' आपके व्यंग्य–कथाओं के लोकप्रिय संकलन हैं। सर्वाधिक संख्या में आपने निबंध लिखे हैं। इनकी कृतियाँ 'परसाई रचनावली' नाम से छह खण्डों में प्रकाशित है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत व्यंग्य लेख 'बेचारा कामनमेन' सन् 1949 में प्रहरी पत्र में छपी थी। इस लेख के आरंभ में, आजकल की प्रचलित 'कहानी' पर व्यंग्य करते हुए वे सामान्य व्यक्ति की ऐसी कहानी गढ़ लेते हैं जिसे आसपास प्रचलित आपा–धापी से कोई सरोकार नहीं है। बेचारा हलकू अनायास ही तथाकथित प्रतिष्ठित लोगों के बीच फँस जाता है और चाहकर भी नहीं निकल पाता। पाठ में कथित समाजसेवी और पत्रकारों पर करारा व्यंग्य हुआ है। उच्च वर्ग और देश–समाज के कर्ताधर्ता कहलाने वालों के सतहीपन पर चोट करने के साथ–साथ 'मौलिक पत्रकारिता' पर भी प्रश्न चिह्न लगाया गया है।

हमारे स्वातंत्र्योत्तर जीवन के अनेक ऐसे महत्वपूर्ण पहलू हैं जिन्हें बिना व्यंग्य के चित्रित ही नहीं किया जा सकता। व्यंग्य के पैने नश्तरों के बिना आजादी के बाद के व्यामोह, सामाजिक पाखंड और राजनीतिक दोगलेपन की सूक्ष्म पर्तें उधेड़ी ही नहीं जा सकतीं। परसाई जी की यह रचना व्यंग्य के साथ–साथ हास्य और करुणा को भी समाहित किए हुए है।

मूल पाठ

शीर्षक देखकर रूढ़िवादी साहित्यिक पिता, पितामह और प्रपितामह सिर ठोंक लेंगे, ''कैसी उच्छृंखलता है!'' और अन्य भाषाओं के शब्दों के स्पर्श से पल्ला बचाने वाले पण्डित घृणा से नाक सिकोड़ेंगे, ''यह क्या खिचड़ी है।'' और एक पैर जमाने के पहिले ही दूसरा पैर उठाकर 'लाँग जम्प' करने को उतावले, हर एक विचित्रता को प्रगति मानने वाले प्रगतिवादी लोग मेरा नाम लिखकर चूम लेंगे और दस बार सिर से लगायेंगे, ''कैसी नवीनता है। इसे कहते हैं प्रगति!'' पर मेरा दुर्भाग्य कि मैं इनमें से कोई नहीं!

कहानी के नाम की भी राम कहानी है। एक दिन कहानी लिख रहा था। भूमिका ही लिख रहा था कि एक मित्र आ गये। मैंने कहा, सुनो! भला सुनाने का शौकीन कौन न होगा? पर कोई सुनाने वाले की पीड़ा, विवशता, संकट हो जान पाता! मैंने सुनाना शुरू किया– ''सम्राट अशोक का राज्य था। मगध में.....'' ''बस–बस!.....'' मित्र ने टोका, ''प्राचीनता के बैंक में जमा की हुई, गौरव की बपौती में से कब तक धन निकालते रहोगे ? यह अच्छा नहीं! अब तो तुम कभी–कभी झूठा जाली चैक बनाकर भी धन खींचने लगे! जीवन में यथार्थ से पराजित होकर प्राचीन के कल्पना–लोक में शरणार्थी बनकर विचरना चाहते हो ? बार–बार पीछे देखने में प्रगति में बाधा पहुँचती है।'' मैंने घबराहट को छिपाकर जवाब दिया, ''प्राचीन में जो कुछ शिव है, जो उज्ज्वल है उसे समाज के सामने लाने में ही तो कल्याण है।''

''नहीं, नहीं भाई! खाक कल्याण करते हो तुम! वही बात लिखोगे न ?– राजा, सात रानियाँ, हर एक के सात–सात बच्चे–'साते–साते उनचास' .....अरे बाप रे!.....हिन्दुस्तान में भोजन की उत्पत्ति कम और बच्चों की ज्यादा। क्या धरा है ऐसी तुम्हारी कहानियों में ?''

''अच्छा भाई, तो वर्तमान की ही लिखता हूँ। देखो ऐसा लिखूँ–''अमेरिका नामक महादेश में राकफेलर नाम के एक सज्जन रहते थे.....'' मुझे बोलने नहीं दिया आगे मित्र ने।

वे बोले, ''अरे राम! यह क्या बक रहे हो!''

''अच्छा भाई, मालूम होता है तुमने संकीर्ण राष्ट्रीयता की मदिरा अधिक पी ली है। खैर, स्वदेश की कहानी ही सुनो – भारत में एक डालमिया परिवार प्रसिद्ध है। इस परिवार में.....'' मेरे मित्र ने यहाँ कुछ ऐसा भाव बनाया कि मुझे डर लगा, कहीं मार न बैठे।

बोले वे, ''अरे जमाना गया भाई धनकुबेरों का। धन की प्रभुता का गान सुनने को कोई तैयार नहीं। यह शताब्दी बीसवीं है – सेंचुरी आफ कामनमेन, जन–साधारण की शताब्दी है यह। जनसाधारण के जीवन से हटा हुआ साहित्य तुम कहाँ खपाओगे ? किसके काम आयेगा ? कुछ 'कामनमेन' के बारे में लिखो मेरे भाई!'' पहिले तो मुझे मित्र के इन शब्दों में 'कम्यूनिज्म' की बू आयी और अपनी भलाई के लिए इनसे दूर रहना ही उचित समझा, पर बात कुछ ऐसी मन पर चढ़ी कि यह 'कामनमेन' की कहानी बन गयी।

''तेरी ठठरी बँध जाय! हाथ पै हाथ धरे बैठा है। आज तीन दिन हो गये। इत्ता भी नहीं बनता कि आसपास की काँजीहौस ही देख लेता।'' बुढ़िया ने हलकू के माथे पर एक चपत जड़कर, मंगल–कामना सहित तिरस्कार किया।

हलकू बुढ़िया का पुत्र था और बुढ़िया हलकू की माँ, यह बात साधारणतया लोगों को तब तक ज्ञात नहीं होती थी जब तक हलकू एक–दो महीने में घर से चुपचाप एक–दो रोज के लिए भाग न जाता और बुढ़िया 'हाय–हाय' करती भटकती न फिरती।

हलकू ग्वाला था। दो भैंसें थीं, जो बाप छोड़ कर मरा था। हलकू रोज सवेरे बर्तन में दूध रखकर शहर बेचने ले जाता और म्युनिसिपैलिटी के नलों का सदुपयोग करके काफी लाभ उठाता। उसके बर्तन वशिष्ठ के कमण्डल की तरह खाली ही न होते।

हलकू की अक्ल पर यदि किसी को सबसे कम विश्वास था तो उसकी माँ को। एक रुपये की चिल्लर भी नहीं गिन पाता था; चार सेर के दाम भी नहीं लगा पाता। हलकू की अवस्था

लगभग 35 साल की थी; और अगर उम्र के साथ–साथ ज्ञान और भी बढ़ता तो वह गाँव के स्कूल का हेडमास्टर जरूर हो जाता। पर हलकू ने होश सँभालने के बाद बड़ी पीने और गाली देने के सिवा और कुछ न सीखा था।

हलकू की शादी भी नहीं हुई थी, बालब्रह्मचारी था। ऐसे पगले, सनकी, मूरख को कौन लड़की देता ? और हलकू ने इन आरोपों का खण्डन करने की चिन्ता भी नहीं की। पढ़ा–लिखा होता तो अखबार में प्रतिवाद छपाता, स्पीच में कहता और विवाह–विज्ञापनों वाले पृष्ठों पर नजर दौड़ाता, दो से चार हाथ कर ही लेता। क्योंकि इस विशाल देश में कोई ऐसा पुरुष नहीं, जिसे रूप, गुण, शील में समानता करने वाली योग्य स्त्री न मिल सके।

हलकू को बुढ़िया की बात लग गयी। बोला, ''अच्छा जाता हूँ रामपुर की काँजीहौस देखने। ला पैसे टिकट के।''

बुढ़िया ने दूसरी स्टेशन रामपुर की टिकट के आने–जाने के दस आने पैसे और चना–चबैना के लिए पाँच आने ऐसे पन्द्रह आने हाथ पर रख दिये। हलकू ने लाठी उठायी और चल दिया। स्टेशन जाकर टिकट लिया और जल्दी–जल्दी में सैकेण्ड क्लास के डब्बे में ही घुस पड़ा!

उसी दिन रामपुर में परचे छपकर बँट रहे थे –

'प्रसिद्ध किसान नेता स्वामी राघवानन्दजी रामपुर में आज शाम को जिला किसान परिषद् का उद्घाटन करेंगे। जनता यह भूली न होगी कि महान् क्रान्तिकारी स्वामी राघवानन्दजी हाल ही में 7 वर्ष के कठिन कारावास के बाद छूटे हैं।'

रामपुर से एक स्टेशन इसी तरफ मोहनपुर नाम का कस्बा था। सवेरे सेठ रामजीवन की दूकान पर गाँव के गणमान्य नागरिक इकट्ठे हुए। सेठ–साहूकार, नेता, मास्टर सब थे। रामजीवन ने कहा, ''आज शाम को रामपुर में स्वामी राघवानन्दजी का भाषण है। आज ही 12 बजे की गाड़ी से वे रामपुर जा रहे हैं जबलपुर से। अगर दो घण्टे के लिए अपने यहाँ उतर जायें, तो गाँव के भाग्य खुल गये, समझ लो।''

''पर वे रुक कैसे सकते हैं। उनका तो कार्यक्रम बन गया होगा न।'' परताप सिंह मास्टर ने कहा।

''अरे यह कौन मुश्किल बात है! लोगों ने तो महात्मा गाँधी की स्पेशल तक रोक ली थी। स्टेशन चल कर अड़ जाओ। जनता का प्रेम देखकर उतर पड़ेंगे। चार बजनेवाली गाड़ी से रामपुर भेज देंगे।'' रामजीवन सेठ के उत्साही उद्गार थे वे। ''अच्छा तो कुछ स्वागत की तैयारी कर लो। थोड़ा–बहुत चन्दा भी इकट्ठा कर लो भाई।'' सेठ किशनलाल, कांग्रेस के मण्डलेश्वर की हैसियत से बोले। किशनलालजी देश–सेवा करना चाहते थे, पर धन पर आँच न आने देते थे। एकाध बार स्वागत का खर्च उनके माथे पड़ चुका था। अब सतर्क हो गये थे।

चन्दा भी हो गया। हमारे विश्वास–परायण समाज में चन्दा मिलना मुश्किल नहीं है। अब तो 25 प्रतिशत कमीशन पर पेशेवर चन्दा इकट्ठा करनेवाले भी मिल जाते हैं। दिनभर किसी नाम से चन्दा इकट्ठा करके शाम को नौ आनेवाली सिनेमा सीट पर सुरैया की एक्टिंग देखनेवाले आपको अनेक मिलेंगे। चन्दा इकट्ठा करनेवाले का उत्साह हमेशा खतरनाक समझें।

रामजीवन सेठ के नेतृत्व में एक भीड़ स्टेशन चली। रास्ते में रामजीवन कहते जा रहे थे, ''अरे अब मेरे तो साथ पढ़े हैं। हमेशा फर्स्ट आते थे। और मुख से तो जैसे फूल झड़ते हैं।''

स्टेशन पर गाड़ी रुकी। सब भीड़ जल्दी–जल्दी सारी गाड़ी के दो–चार चक्कर लगा गयी। पर स्वामी राघवानन्दजी न मिले। रामजीवन सबके आगे थे। अचानक भीड़ ने सैकेण्ड क्लास के डब्बे के हैण्डल पकड़े हलकू को देखा। विचित्रता और असामंजस्य अक्सर महानता का भ्रम कराते ही हैं। सैकेण्ड क्लास के डब्बे में 'ऐसे' आदमी को देखकर बरबस भीड़ चिल्ला उठी, ''वै हैं स्वामीजी! कैसा सरल वेश है।''

रामजीवन ने भी अपने परिचय को पक्का करने के लिए कहा, ''हाँ–हाँ, वे ही तो हैं। वही नाम, वही गोल चेहरा, वे ही आँखें – हाँ, रंग जरा साँवला पड़ गया है।''

भीड़ ने नारे लगाये, ''स्वामी राघवानन्द की जय!'' हलकू को सैकेण्ड क्लास के डब्बे से निकालने के लिए आया हुआ टिकिट–चेकर रुक गया, महान् के सामने नतमस्तक हुआ।

रामजीवन ने हाथ जोड़कर मास्टर प्रतापसिंह द्वारा लिखकर रटवाये गये वाक्य दुहराये – ''महात्मन्! यद्यपि हमें विदित है कि आपको आज सन्ध्या समय रामपुर में विराट जनसमूह पर अपनी वाणी से अमृत– वृष्टि करनी है। तथापि इस नगर के क्षुद्र जन भी आपके सदुपदेशों को श्रवण करने के लिए लालायित हैं। केवल दो घण्टे समय देकर हम लोगों को कृतार्थ करेंगे, ऐसी आशा ही नहीं विश्वास है।'' ऐसा निवेदन कर रामजीवन ने आसपास देखा और जब साथियों की आँखों में 'शाबास' का संकेत पढ़ लिया तो डब्बे से ससम्मान उतारने के लिए बढ़ा।

''रामपुर उतरूँगा।'' हलकू ने विरोध किया। रामजीवन ने फिर हाथ जोड़कर कहा, ''जी हाँ महात्मन्, हमें विदित है, आपको अवकाश नहीं है। फिर भी हम लोगों के इस विनम्र निवेदन की अवहेलना कृपा कर न करिए।''

सेठ किशनलाल ने कान में कहा कि नेता लोगों को जबरदस्ती उतारना होता है, तब उन्हें जनता का प्रेम मालूम होता है। आखिर किशनलाल और रामजीवन दोनों ने हलकू को जबरदस्ती उतार लिया और एक पालकी पर बिठाकर ले चले। पीछे बड़ी भारी भीड़ थी। स्वामी राघवानन्द की जय के नारे लगा रहे थे। हलकू भौचक्का–सा बैठा था; घबड़ा रहा था, पर भाग भी न सकता था।

लोग कह रहे थे ––'कैसी सरल चितवन है! और वेश–भूषा भी कैसी सरल। डाढ़ी बनवाने की भी चिन्ता नहीं। कपड़े भी कैसे मैले–से, फटे हुए।''

हलकू नाखून चबाने लगा घबड़ाहट में। रामजीवन ने किशनलाल के कान में कहा, ''पूरे परमहंस हैं। जरा सुधबुध नहीं शरीर की!''

आधे रास्ते में पहुँचकर हलकू पालकी से कूद पड़े। ''अरे–अरे स्वामीजी क्षमा! जल्दी–जल्दी में मोटर का प्रबन्ध न हो सका।''

''पैदल चलौंगो।'' हलकू ने कहा।

''वाह, क्या नम्रता है! क्या विनय है ? मान–सम्मान से कोसों दूर भागते हैं।'' किशनलाल ने कहा।

दो–चार कदम चलने पर हलकू आसपास देखकर फिर चिल्लाया, ''भागो यहाँ से। इत्ते आदमी ने क्यों भीड़ लगायी है ?''

मास्टर प्रतापसिंह भीड़ से कह रहे थे, ''देखा ? इसे कहते हैं महानता! प्रदर्शन नहीं चाहते, प्रोपेगेण्डा नहीं चाहते, नाम नहीं चाहते। चुपचाप देश–सेवा करना चाहते हैं। धन्य है।'' और फिर हलकू के आगे हाथ जोड़कर बोले, 'भगवन्, यह जनसमुदाय आपके दर्शन करके कृतकृत्य होने को उत्सुक है।''

इतने में रास्ते के पास से एक गाय और एक भैंस निकली। अच्छी सुन्दर, हृष्ट–पुष्ट! हलकू की आँखें चमक उठीं, मुँह से निकल पड़ा, ''वाह! क्या बनायी है!''

दैनिक 'सन्देश' का संवाददाता वहीं था। उसने लिखा 'स्वामीजी ने भारत में गोधन के ह्रास पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि गोधन की वृद्धि से ही भारत का कल्याण हो सकता है। वर्तमान पीढ़ी भी, दूध के अभाव में निर्बल, निस्तेज हो रही है।'

जुलूस एक अट्टालिका के सामने पहुँचा। हलकू को रामजीवन ससम्मान भीतर ले गये। सोफे लगे थे। एक पर रामजीवन ने हलकू को बैठाया। हलकू ज्यों ही उस पर बैठा त्यों ही स्प्रिंगदार सोफे में छाती तक समा गया। घबड़ाकर एक चिहुँक के साथ दूर कूद गया और एक कोने में फर्श पर बैठ गया। एकत्रित जनसमूह आश्चर्य से देखने लगा। पर रामजीवन ने मुस्कुराकर बुद्धिमानी से सिर हिलाया और धीरे–धीरे कहा, ''स्वामीजी सादा जीवन पसन्द करते हैं। जब तक भारत में किसान राज्य न हो जाय, फर्श पर सोने की प्रताप प्रतिज्ञा कर ली है।''

जनसमूह धीरे–धीरे चला गया। अब सभा की तैयारी में लग गये। रामजीवन ने चाय बनवाकर भिजवायी। हलकू ने जल्दी से प्याला पकड़कर मुँह से लगा दिया। गरम चाय थी, मुँह जल गया और हाथ से प्याला छूटकर फर्श पर गिर पड़ा। नौकर घबड़ाकर मालिक के पास गया और हाल सुनाया।

दैनिक 'उत्कर्ष' का संवाददाता वहीं बैठा था। उसने लिखा–'स्वामीजी ने कहा कि चाय भारत के नौजवानों को बलहीन बना रही है। यह विष है जो देश के जीवन को खाये जा रहा है। इससे देश के लोग निस्तेज, बलहीन हो रहे हैं। चाय का उपयोग बन्द होना चाहिए।'

थोड़ी देर के बाद मधुर पकवान बनवाकर रामजीवन ने भोजन के लिए भेजे। हलकू ने साग–रोटी और दाल के सिवा और कुछ न खाया था। पहले खाना ध्यान से देखा और फिर बोला, ''भाजी रोटी!''

साप्ताहिक 'Indian Hero' पत्र का संवाददाता भी आ चुका था। उसने लिखा – 'The Swamiji advised Simple food and emphasised on the need of taking green vegetables.'

इधर जबलपुर किसान सभा का एक तार रामपुर किसान परिषद् की स्वागत समिति के पास पहुँचा –'Swamiji indisposed unable to come.' (स्वामीजी अस्वस्थ हैं, नहीं आ सकते)। और रामजीवन ने मोहनपुर से एक तार रामपुर किसान परिषद् की स्वागत समिति के सभापति को किया।

Swamiji detained. Will come in the evening.

(स्वामीजी रोक लिये गये हैं, शाम को आवेंगे)।

स्वागत समिति के सभापति के सामने इन दो तारों ने बड़ी समस्या खड़ी कर दी। आखिर उन्होंने तुरंत कार ली और दस मिनिट में मोहनपुर आ गये।

रामजीवन ने देखा तो प्रसन्न हो गये। बोले, ''अच्छा हुआ आप आ गये। स्वामीजी मोटर से ही चले जायेंगे। क्या कहना है साहब! बड़ी सौम्यमूर्ति है। कैसे सरल हैं। किसी बात की परवाह नहीं, विचारों में मग्न, भूले–से रहते हैं। बात–चीत भी नहीं करते। हम लोग तो बस कृतार्थ हो गये। आइए, दर्शन कर लीजिए आप भी।

सभापति बोले, ''अरे यह क्या कह रहे हैं आप ? जबलपुर से तो तार आया है कि स्वामीजी अस्वस्थ हैं, नहीं आ सकते। और तुम कहते हो यहाँ।''

रामजीवन बड़े जोर से हँसे, ''ये है राजनीति। किसी खिलाफ पार्टीवाले ने झूठा तार कर दिया होगा आपको। आइये, देख लीजियेगा।''

सभापतिजी चले उस मकान की ओर जहाँ हलकू बैठे थे। बाहर काफी भीड़ थी।

सभापतिजी के साथ जबलपुर के 'किसान मित्र' साप्ताहिक के सहकारी सम्पादक पण्डित कौशलनाथ रसिकेश भी आये थे। रसिकेशजी के यहाँ हलकू आज सात साल से दूध देता है।

ज्योंही रसिकेशजी कमरे में प्रविष्ट हुए त्यों ही हलकू उठा और उनके पैर पर गिरकर रोने लगा – मैन्ना भैया मेरे को बचा लो! जे मेरे को मार डालेंगे। मैं तो भैंस.....! बस यहीं हलकू चूक गया। वरना उसमें और स्वामी राघवानन्द में कोई फर्क नहीं था, अभी तक। हलकू ईमानदार और सीधा होने के कारण आजीवन सन्त के पद का लाभ नहीं ले सका। वह भाग गया।

पर जो उसे राघवानन्द बनाकर स्वार्थ–साधन करना चाहते थे, उनके मुँह जनता में बहुत दिन तक नहीं दिखे।

•••

शब्दार्थ

उच्छृंखलता–स्वच्छंदता, मनमानी / ठठरी–कंकाल / प्रतिवाद–तर्क / क्षुद्र–छोटा / अवहेलना–अवज्ञा / प्रोपेगेण्डा–झूठा प्रचार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विचित्रता और असामंजस्य किसका भ्रम कराते हैं ?

(क) पवित्रता का (ख) महानता का ( )

(ग) नाटकीयता का (घ) दुर्बलता का

2. 'इससे लोग निस्तेज, बलहीन हो रहे हैं।' 'इससे' सर्वनाम किस चीज के लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(क) चाय (ख) शराब

(ग) गरिष्ठ भोजन (घ) धन ( )

उत्तरमाला– (1) ख (2) क

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हर एक विचित्रता को प्रगति मानने वाले क्या कहलाने लगे हैं ?
2. होश संभालने के बाद हलकू क्या–क्या सीख गया था ?
3. किसका उत्साह हमेशा खतरनाक समझने को कहा गया है ?
4. मधुर पकवान देखकर भी हलकू के मुँह से क्या निकला ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''हिन्दुस्थान में भोजन की उत्पत्ति कम और बच्चों की ज्यादा'' किस संदर्भ में कहा गया है ?
2. रामपुर में बँट रहे परचों पर क्या छपा था ?
3. हलकू बुढ़िया का पुत्र था, इसका पता कैसे चलता था ?
4. हलकू द्वारा नाखून चबाने पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?
5. सेठ किशन लाल की सतर्कता का क्या कारण था ?
6. दैनिक 'उत्कर्ष' के संवाददाता ने किस घटना पर समाचार दिया ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. हलकू का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. पाठ में पत्रकारिता पर क्या व्यंग्य हुआ है ?
3. स्वामी राघवानन्द के बारे में अनुमानित आलेख लिखिए।
4. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) ''अरे जमाना गया भाई.....कामनमेन की कहानी बन गई।''

   (ख) ''ज्योंही रसिकेश जी कमरे में .....वह भाग गया।''

•••

यह भी जानें

हल् चिह्न (्)

(क) (्) को हल् चिह्न कहा जाए न कि हलंत। व्यंजन के नीचे लगा हल् चिह्न उस व्यंजन के स्वर रहित होने की सूचना देता है, यानी वह व्यंजन विशुद्ध रूप से व्यंजन है। इस तरह से 'जगत्' हलंत शब्द कहा जाएगा क्योंकि यह शब्द व्यंजनांत है, स्वरांत नहीं।

(ख) संयुक्ताक्षर बनाने के नियम के अनुसार ङ्, छ्, ट्, ठ् ड्, ढ्, द्, ह् में हल् चिह्न का ही प्रयोग होगा। जैसे – चिह्न, बुड्ढा, विद्वान आदि में।

(ग) तत्सम शब्दों में प्रयोग वांछनीय हो तो हलंत रूपों का ही प्रयोग किया जाए; विशेष रूप से तब जब उनसे समस्त पद या व्युत्पन्न शब्द बनते हों। जैसे – प्राक्–(प्रागैतिहास), वाक्–(वाग्देवी), सत्– (सत्साहित्य), भगवन् – (भगवद्भक्ति), साक्षात्–(साक्षात्कार), जगत्–(जगन्नाथ), तेजस्–(तेजस्वी), विद्युत–(विद्युल्लता) आदि।

(घ) तत्सम संबोधन में हे राजन्, हे भगवन् रूप ही स्वीकृत होंगे। हिंदी शैली में हे राजा, हे भगवान लिखे जाएँ। जिस शब्दों में हल् चिह्न लुप्त हो चुका हो, उनमें उसे फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए। जैसे – महान, विद्वान, आदि; क्योंकि हिंदी में अब 'महान' से 'महानता' और 'विद्वान' से 'विद्वानों' जैसे रूप प्रचलित हो चुके हैं।

•••